ओ३म्
डेली हिन्दी मिलाप हैदराबाद
REGD. No. H/HD-124
वर्ष : 54
अंक : 166
हैदराबाद, शनिवार, 16 जून, 2001 DAILY HINDI MILAP HYDERABAD, SATURDAY 16th JUNE 2001 मूल्य : रु. 2-00 (पृष्ठ 12)

कैंसर के इलाज में करिश्माई कामयाबी

भारतीय जड़ी-बूटियां कैंसर-जैसे जानलेवा रोग से निपटनें में सक्षम हैं। राजस्थान के मख्यात आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. नंदलाल तिवारी ने इसे साबित कर दिखाया है।

ने असम, दार्जिलिंग व महाराष्ट्र में लगातार 18 बरसों त[illegible]स्पतियों पर अनुसंधान कर "कर्क्टोल" नामक यौगिक ईजाद किया है। आठ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के इस मिश्रण से वे मौत की ओर बढ़ रहे कई कैंसर रोगियों को नई जिन्दगी देने में सफल हुए हैं। पर उनकी इस चमत्कारिक सफलता का केंद्र व राज्य सरकार ने कोई नोटिस नहीं लिया है।

अपने देश और राज्य में उनकी उपेक्षा हो रही है। पर विदेशों में उनकी पूछ बढ़ती जा रही है। डॉ. तिवारी द्वारा तैयार यौगिक खासकर गर्भाशय, स्तन, यकृत, प्रोस्टेट, हड्डी, भोजननली व रक्त के कैंसर के इलाज में काफी असरदार साबित हुआ है। अन्य प्रकार के कैंसर में भी इसके अच्छे नतीजे सामने आए हैं। सिर्फ एसाइटिस कैंसर में यह बेअसर सिद्ध हुआ है। खास बात यह है कि कैंसर की अंतिम अवस्था में भी कई मरणासन्न रोगी इस दवा से ठीक हुए हैं। महाराष्ट्र से राजस्थान लौट कर यहां मालवीय नगर में अपने घर में कैंसर पीड़ितों को जीवनदान दे रहे 60 वर्षीय डॉ. तिवारी बीते 20 सालों में सैकड़ों रोगियों को कैंसर से निजात दिला चुके हैं। उन्हें मिली इस करिश्माई कामयाबी पर सहसा भरोसा नहीं होता। पर रोग मुक्त हुए लोग और उनकी जांच रपटें इसकी पुष्टि करती हैं। नाम व दाम की लालसा न होने और प्रचार से दूर रहने के कारण डॉ. तिवारी अभी तक अपने गृह राज्य में ही लगभग अनजान बने हुए हैं। दूसरे राज्यों में उनकी ख्याति काफी फैली है। सो उनके पास राजस्थान से ज्यादा मरीज महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, पंजाब आदि राज्यों से आते हैं। राजस्थान के [illegible]दड़ी के लाल की ख्याति देश की सीमाएं भी पार कर चु[illegible] अमेरिका, जापान, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, पाकिस्तान, दुबई, बहरीन, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों के कैंसर-पीड़ितों ने यहां आकर डॉ. तिवारी की दवा 'कर्क्टोल' से फायदा उठाया है। अमेरिका व ब्रिटेन के कुछ प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने भी डॉ. तिवारी को माना है। इनमें दुनियां का पहला कैंसर अस्पताल राटल मार्सडेन हॉस्पिटल कैलीफोर्निया, द ईगल्स क्लिफ मेडिकल प्रैक्टिक्स, क्वीवलैण्ड और सेंट थॉमस हॉस्पिटल, लंदन शामिल हैं। थॉमस हॉस्पिटल से एफ. आर. सी. एस. की डिग्री लेने में भारतीय डॉक्टर गौरव मानते हैं। कैंसर उपचार में डॉ. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने उनके काम पर फिल्म बनाई है। ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घण्टे का इन्टरव्यू प्रसारित किया है। इंग्लैंड, जर्मनी, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, सिंगापुर जैसे अनेक देशों में उन्हें उपचार के लिए बुलाया जा चुका है। देश के सबसे बड़े कैंसर उपचार केंद्र, टाटा मैमोरियल कैंसर अस्पताल, मुम्बई व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डॉक्टरों ने भी डॉ. तिवारी के पास असाध्य कैंसर रोगी भेजे हैं। इनमें से देश - विदेश के कई मरीज कर्क्टोल से ठीक हुए हैं। टाटा कैंसर अस्पताल के एक कैंसर-ग्रस्त डॉक्टर को भी इलाज के लिए यहां भेजा जा चुका है। डॉ. तिवारी अपनी दवा से सभी मरीजों के ठीक होने का दावा नहीं करते। उन्होंने बताया कि उनके पास ज्यादातर (90 फीसदी) मरीज ऐसे आते हैं, जिन्हें हर तरह के लम्बे व खर्चीले इलाज के बाद अस्पतालों से जवाब दे दिया जाता है। इन रोगियों को डॉक्टर यह कह कर घर लौटा देते हैं, कि ये अब भगवान को याद करें। कैंसर की अंतिम अवस्था वाले ये रोगी मौत के काफी करीब पहुंच चुके होते हैं। फिर भी उनमें से दस से तीस फीसदी मरीजों को उनकी दवा से सौ फीसदी और तीस से पैंतालीस फीसदी रोगियों को काफी लाभ मिला है। अंतिम अवस्था के कैंसर में, उन्नत एलोपैथिक चिकित्सा से 5 से 10 फीसदी मरीजों को ही लाभ हो पाता है। ऐसे में डॉ. तिवारी की सफलता का आंकड़ा बहुत मायने रखता है। कैंसर की दूसरी अवस्था (सेकंड स्टेज) वाले रोगियों में अपनी सफलता की दर 45 से 50 फीसदी बताते हुए वे दावा करते हैं कि उनकी दवा प्रारंभिक अवस्था वाले ज्यादातर (80 फीसदी) मरीजों को पूरी तरह चंगा करने की कूव्वत रखती है। देश-विदेश की प्रयोगशालाओं में किये गये परीक्षणों में यह दवा मानव शरीर के लिए निरापद (निर्दोष, दुष्प्रभाव रहित) पाई गई है। इन परीक्षणों की रिपोर्टों के साथ डॉ. तिवारी के पास देश - परदेश के मरीजों की जांच रिपोर्टें भी मौजूद हैं। उनमें ऐसी रपटें शामिल हैं जिनमें जिन प्रयोगशालाओं ने जिन मरीजों में कैंसर होना प्रमाणित किया था, उन्हीं प्रयोगशालाओं ने डॉ. तिवारी [illegible] इलाज के बाद जांच कर उन्हीं मरीजों में कैंसर का प्रभाव [illegible] (निल) बताया है।

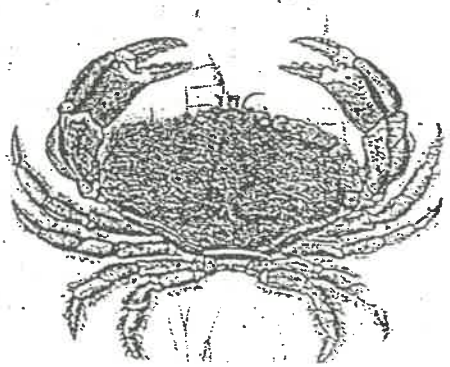

1985 से '90 के मध्य उन्होंने 1977 रोगियों का इ[illegible] किया। उनमें भोजन नली के कैंसर के 429, स्तन कैंसर [illegible] 208, गर्भाशय कैंसर के 178 व ब्लड कैंसर के 162 रोगी [illegible]

कैंसर उपचार में डॉ. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने उनके काम पर फिल्म बनाई है। ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घण्टे का इंटरव्यू प्रसारित किया है। इग्लैंग जर्मनी, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, सिंगापुर जैसे अनेक देशों में उन्हें उपचार के लिए बुलाया जा चुका है। देश के सबसे बड़े कैंसर उपचार केंद्र, टाटा मैमोरियल कैंसर अस्पताल, मुम्बई व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डॉक्टरों ने भी डॉ. तिवारी के पास असाध्य कैंसर रोगी भेजे हैं। इनमें से देश - विदेश के कई मरीज कर्कटोल से ठीक हुए हैं।

- *शिवराज तिवा[illegible]*

सम्पर्क पता : डॉ. नन्दलाल तिवार[illegible]
2/13, मालवीय नगर, जयपुर - 302017, राजस्था[illegible]